सत्यमेव जयते

मुंडारी सेंड़ा पुटिः

मुंडारी भाषा प्रवेशिका

MUNDARI PRIMER

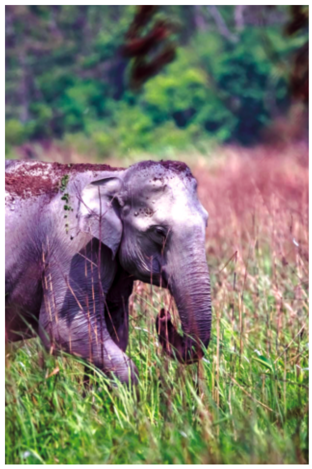

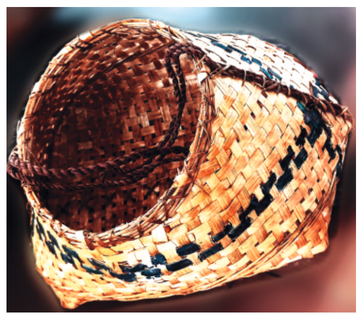
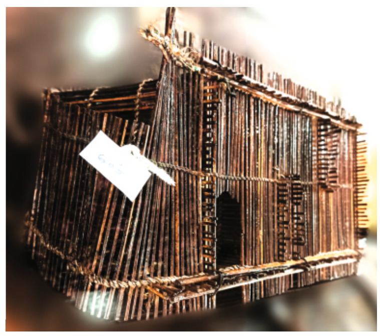

CIIL-NCERT Primer Series

ई-पाठशाला

क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।

1. प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें
2. क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें
3. स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें
4. लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें
5. उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें– https://epathshala.nic.in/topics.php पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। **दीक्षा** का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।

1. अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें
2. अपनी भूमिका चुनें–शिक्षक या विद्यार्थी
3. पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें
4. क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें
5. कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें
6. क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें– https://diksha.gov.in/resources पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

" जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।"

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

मुंडारी सेंड़ा पुटिः

मुंडारी भाषा प्रवेशिका

MUNDARI PRIMER

भारतीय भाषा संस्थान

Central Institute of Indian Languages

(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)

Manasagangotri, Mysuru - 570 006

Ph: 0821-2515820 (Director)

email: ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

National Council of Educational Research and Training

Sri Aurobindo Marg

New Delhi-110016

Ph: 011 2696 2580

email: dceta.ncert@nic.in

मुंडारी सेंड़ा पुटिः

मुंडारी भाषा प्रवेशिका

MUNDARI PRIMER

A basal reader of Mundari alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi level and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors
Dinesh Prasad Saklani
Shailendra Mohan
Sujoy Sarkar
Puspa Thounaojam

ISBN: 978-81-19411-80-1

First Edition: March 9, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024
All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: Nandakumar L
Cover Photo: Thounaojam Sharat, Naoba Khuman

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

मंत्री
शिक्षा; कौशल विकास
और उद्यमशीलता
भारत सरकार
Minister
Education; Skill Development
& Entrepreneurship
Government of India

संदेश

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित भारत 2047 के संकल्प के मार्ग का प्रमुख अवयव भारतीय भाषाएँ हैं, जिनसे ज्ञान-विज्ञान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुंच देश के समस्त बच्चों तक सुनिश्चित हो सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफ़ारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब छात्रों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसीलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की आवश्यकता है।

अतः हमने एन.सी.ई.आर.टी तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा/ओं तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों के लिए बहुत उपयोगी साबित होंगी।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

स्वच्छ भारत

कौशल भारत, कुशल भारत

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
MSDE - Room No. 516, 5th Floor, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110001, Phone : 91-11-23465810, Fax : 011-23465825
E-mail : minister.sm@gov.in, minister-msde@gov.in

प्राक्कथन

भाषा समाज का एक अभिन्न अंग है। भाषा संस्कृति का एक उपादान है, समुदाय की पहचान है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी है। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है-एक ओर भारत की भाषिक विविधता को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। साथ ही यह भी बताता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारतीय संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं के मुद्दों पर हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित बिंदु है कि बच्चों के पास भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है, अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों-ये किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को '*बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति*' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह मज़बूत नींव न केवल भविष्य में विद्यालय एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित हों।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं) प्राइमरों(का लक्ष्य छोटे बच्चों या अन्य भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से सुपरिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढ़ीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये पुस्तिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों, जैसे-बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी। शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी का उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार; एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

मार्च, 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

भूमिका / Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्याधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अधययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएं बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilized efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to ‘Viksit Bharat’. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognising, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarizes children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

मार्च, 2024
मैसूरु

प्रो. शैलेंद्र मोहन
निदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु

CIIL-NCERT Primer Series: Mundari Primer Development Team

Guidance

Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi
Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru
Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors

Amarendra P. Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology (CIET), NCERT, New Delhi
Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Basanta Kumar Panda, Project Director, Centre of Excellence for Studies in Classical Odia, Bhubaneswar
Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi
Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Binay Patnaik, Senior Researcher cum Chief Consultant, NCERT, New Delhi
Pramod Kumar, Assistant Professor, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak
Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru

Member Coordinators

Sujoy Sarkar, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru
Sanjaya Kumar Bag, Odia Lecturer, Eastern Regional Language Centre (ERLC), CIIL, Bhubaneswar

Resource Persons

Parwati Mundu, Assistant Professor, J.N. College, Dhurwa, Ranchi
Ajit Munda, Assistant Professor, R.L.S.Y. College, Ranchi
Juran Singh Manki, Assistant Professor, S.S. Memorial College, Ranchi
Puspa Thounaojam, Resource Person (RP), Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru

Reviewer

Amita Munda, Assistant Professor, Department of Mundari, Ranchi Women's College, Ranchi

Hindi Reviewers

Biresh Kumar, Senior Resource Person (SRP), National Testing Service-India (NTS-I), CIIL, Mysuru
Prem Chandra Jha, Guest Lecturer, ERLC, CIIL, Bhubaneswar
Sumitra Mishra, Junior Resource Person (JRP), NTS-I, CIIL, Mysuru

Design Team

Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission (NTM), CIIL, Mysuru
Saravanan A S, Graphic Editor, SPPEL, CIIL, Mysuru
Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru
Puttaraju K, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer, anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

कैसे पढ़ानी है भाषा प्रवेशिका की किताब (मुंडारी)

मुंडा शब्द का अर्थ है– गांव का मालिक या ग्रामप्रधान । मुंडा समुदाय की भाषा मुंडारी है जो ऑस्ट्रिक भाषा परिवार की एक शाखा है । भारत की जनगणना 2011 में मुंडारी बोलने वालों की संख्या 11,28,228 दर्ज की गई है । मुंडारी बोलने वाले मुख्य रूप से झारखंड राज्य में केंद्रित हैं, जिनकी संख्या 9,42,108 है तथा ओडिशा में इनकी संख्या 1,23,488 है । इसके अतिरिक्त मुंडारी भाषा बोलने वाले बिहार, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, असम और अंडमान–निकोबार सहित भारत के अनेक राज्यों में रहते हैं । मुंडा जनजाति मागे, फागू, करम, सरहुल और सोहराई आदि त्योहार मनाती है । फूलों का त्योहार सरहुल एक महत्वपूर्ण त्योहार है, जो मार्च–अप्रैल के महीने में मनाया जाता है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं बुनियादी स्तर के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2022 के अंतर्गत तीन से आठ साल तक के बच्चों को मातृभाषा/घर की भाषा/स्थानीय भाषा/आंचलिक भाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है । भारत के ग्रामीण इलाकों में बच्चे कक्षा में शिक्षा प्रदान करने की प्रणाली को ठीक से समझ नहीं पाते हैं । यह बात स्कूल में शिक्षा देने की व्यवस्था को प्रभावित करती है । इसीलिए केंद्र सरकार ने तीन से आठ वर्ष तक के बच्चों को बाल–वाटिका एवं प्रथम तथा द्वितीय कक्षा के बच्चों को आद्य–प्राथमिक स्तर पर मौलिक साक्षरता प्रदान करने की व्यवस्था की है । इसमें स्थानीय गीतों एवं कहानियों के माध्यम से बच्चों की मौखिक भाषा के विकास पर ध्यान दिया गया है । यह काम किताबों की कहानियों, चित्रों एवं वार्तालापों के माध्यम से किया जा रहा है । इसके साथ ही बच्चों के ध्वनि–परिचय, वर्ण–परिचय, पढ़ने एवं लेखन–अभ्यास के लिए भी भाषा प्रवेशिका का प्रयोग किया जा रहा है ।

बाल–वाटिका स्तर से द्वितीय कक्षा तक के बच्चों को मातृभाषा में पढ़ाने से उनके बौद्धिक विकास के साथ–साथ उनकी सृजनशीलता एवं कल्पनाशक्ति का भी विकास हो सकता है । बच्चे अपनी मातृभाषा में पढ़ना–लिखना सीखने के साथ–साथ धीरे–धीरे हिन्दी भाषा में कैसे पढ़–लिख सकते हैं, इसकी सार्थक पद्धति बुनियादी स्तर के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2022 में विस्तृत रूप से लिखी गई है । बच्चे पहले पढ़ना–लिखना सीखते हैं । इसीलिए मुंडारी भाषा की वर्णमाला की पुस्तक में बच्चों की मातृभाषा एवं स्कूल की हिन्दी भाषा की समस्त ध्वनियों, वर्णों एवं मात्राओं को स्थान दिया गया है । बच्चों की संस्कृति एवं परिवेश से शब्द संगृहीत किए गए हैं एवं पुस्तक में उन्हें स्थान दिया गया है ।

बहुभाषी शिक्षा का मूल उद्देश्य है बच्चों के घर की भाषा से पढ़ना–लिखना शुरू करके राज्य की भाषा में पढ़ने–लिखने की उनकी दक्षता को बढ़ाना। मुंडारी भाषा में प्रस्तुत यह प्रवेशिका झारखंड के शिक्षकों एवं छात्र–छात्राओं के लिए तैयार की गई है । मौलिक साक्षरता के चार प्रमुख कदम होते हैं । पहले कदम में कहानी, कथा एवं चित्र के माध्यम से बच्चों का बौद्धिक विकास किया जाता है । उसके बाद भाषा–शिक्षण के लिए बच्चों को वस्तु के साथ–साथ शब्दों के संपर्क से परिचित कराया जाता है । शब्दों में व्यवस्थित अक्षरों का परिचय कराया जाता है । इस पर्याय में बच्चे अलग–अलग अक्षरों को पहचानना सीखते हैं । इसके माध्यम से बच्चे ध्वनि एवं वर्ण के बीच के संपर्क को समझते हैं । इस भाषा प्रवेशिका को कैसे पढ़ना है, इसके मूल बिंदुओं को नीचे लिखा गया है–

ध्वनि–परिचय: बच्चे चित्र देखकर वस्तु का नाम कहेंगे । शिक्षक पूछेंगे कि चित्र का नाम किस ध्वनि से शुरू होता है? जैसे मुंडारी भाषा का शब्द 'अकड़ा' और बच्चे चित्र को देखकर पहचानेंगे कि यह शब्द 'अ' की ध्वनि से शुरू होता है ।

वर्ण–परिचय: शिक्षक पहले बच्चों को बताएंगे कि 'अ' वर्ण कैसे दिखता है । फिर उसमें दिये गये कुछ शब्दों में से 'अ' अक्षर या वर्ण को पहचानने के लिए कहेंगे । वच्चे तीन–चार शब्दों में से 'अ' अक्षर की पहचान कर उसकी ध्वनि का उच्चारण करेंगे और उसे लिखने का अभ्यास करेंगे ।

पढ़ना: बच्चे चित्र देखकर अपनी भाषा में शब्द बोलेंगे । उस शब्द पर उंगली को चलाकर बच्चे मुंडारी शब्द 'अकड़ा' को पढ़ेंगे । इसी प्रकार के अन्य शब्दों को पढ़कर वे 'अ' वर्ण को पहचानेंगे और उसका उच्चारण करेंगे । बच्चे शिक्षकों को यह बताएँगे कि 'अ' अक्षर शब्द के आरंभ में आता है या बीच में या अंत में ।

शिक्षक बोर्ड पर 'अकड़ा' के अलावा तीन–चार अन्य शब्द भी लिखेंगे । फिर बच्चों को एक–एक करके बुलाएँगे और उनसे शब्दों को पढ़ने एवं वर्णों को पहचानने के लिए कहेंगे । चूँकि ये सारे शब्द बच्चों के जाने–पहचाने परिवेश से लिए जाते हैं । अतः वे प्रवेशिका में चित्रों को देखकर शब्दों को पहचान पाएँगे और उन्हें सहजता से बोल पाएँगे । शिक्षक कोई एक शब्द लिखेंगे और उसके प्रत्येक वर्ण को अलग–अलग पढ़ने के लिए बच्चों से कहेंगे । फिर वर्णों को जोड़कर उन शब्दों को पढ़ने के लिए कहेंगे । इससे बच्चों का वर्ण परिचय, शब्द परिचय एवं ध्वनि परिचय हो जाएगा । एक बच्चे द्वारा शब्द को पढ़ने के समय अन्य बच्चे उसके साथ मिलकर उस शब्द को दुहराएँगे । इसे 'सामूहिक पठन' कहते हैं ।

लेखन: शिक्षक बच्चों को पहले 'अकड़ा' शब्द के 'अ' अक्षर को लिखना सिखाएँगे । इसके लिए कलम/पेंसिल को कैसे चलाया जाता है, यह भी सिखाएँगे । इसे 'सहायक लेखन' कहा जाता है । इसके बाद बच्चे प्रवेशिका में दिये गये खाली स्थान में 'अ' अक्षर को स्वयं लिखेंगे । इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षक बच्चों की सहायता करेंगे ।

बच्चों की मौखिक भाषा के विकास के लिए हर प्रविष्टि में दो–तीन पंक्तियों की कविता दी गई है । इसको पढ़ कर एवं गाकर शिक्षक बच्चों के साथ उस पर चर्चा करेंगे । शिक्षक विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध बच्चों की कहानी की किताब से कहानियाँ सुनाकर बच्चों के साथ उस पर चर्चा करेंगे । वे प्रथम एवं द्वितीय कक्षा के बच्चों को उनकी मातृभाषा में कहानियाँ एवं गीत सुनाएँगे ।

इस प्रवेशिका में जितने शब्द दिए गये हैं वे साक्षरता का नमूना मात्र हैं । लेकिन बच्चे सैकड़ों शब्दों को जानते हैं । इसलिए एक वर्ण वाला शब्द पूछने से वे अनेक शब्द सुना सकते हैं । जैसे, शिक्षक यह पूछेंगे कि – 'अ' से शुरू होनेवाले कुछ शब्द सुनाओ ।

बच्चों की सुविधा के लिए पहले मुंडारी भाषा में उपलब्ध वर्णमाला से गीत/अक्षर/शब्द दिए गए हैं । इन्हें सीखने के समय बच्चे अपनी मातृभाषा के माध्यम से हिंदी की ध्वनि एवं लिपि भी सीख सकते हैं ।

राज्य के विद्यालयों में वितरित 'शिक्षक सहायक पुस्तिका' पढ़कर आप मौलिक साक्षरता के बारे में अधिक जानकारी ले सकते हैं ।

नीचे दी गई रेखाओं को देखो और खाली स्थानों में उसी तरह की रेखाएँ बनाओ :

खड़ी रेखा :

पड़ी रेखा :

आड़ी रेखा 1 :

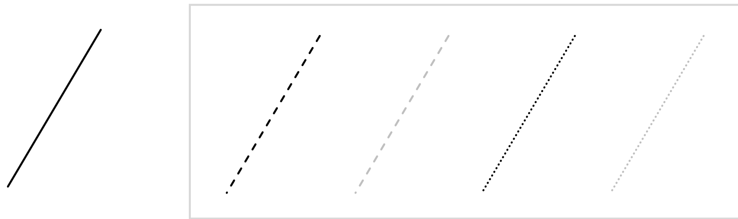

आड़ी रेखा 2 :

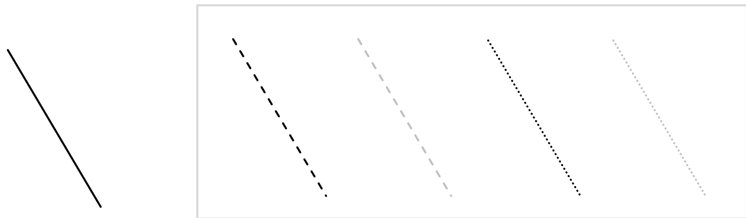

अर्ध वृत्ताकार रेखा 1 :

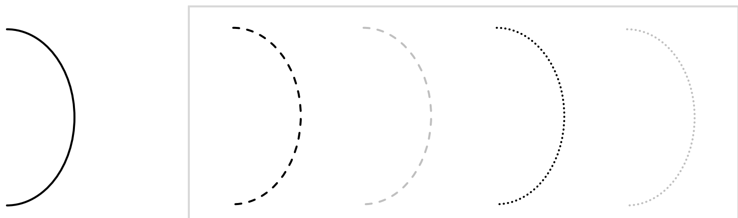

अर्ध वृत्ताकार रेखा 2 :

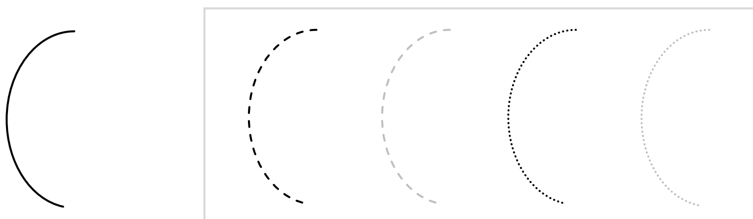

नोट: शिक्षक यह सिखाएँगे कि कलम/पेंसिल को कैसे पकड़ें और दिये गये स्थानों में रेखाएँ कैसे खीचें।

मुंडारी बनिहिसिर

मुनु बनि

अ	आ	इ	ई	उ
ऊ	ए	ओ	अं	अः

मात्रा	◌ा	◌ि	◌ी	◌ु
◌ू	◌े	◌ो	◌ं	◌ः

बोजा बनि

क	ख	ग	ङ	
च	ज	झ	ञ	
ट	ड	ढ		
त	थ	द	न	
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल		
स	ह			
ड़				

मुंडारी बनिहिसिर रे बनो:

मुनु बनि				
ऋ	ऐ	औ		

बोजा बनि				
घ	छ	ठ	ण	ध
व	श	ष	क्ष	त्र
ज्ञ	श्र	ढ़		

अ

अकड़ा

नृत्य स्थल

अ ते अकड़ा
अकड़ा रे दुमङ साड़ितना,
दंगड़ा दंगड़िको रसिकातना।

अपिरकल	हवाई जहाज	ओअरि	बरामदा	टकअ	रुपया

अ अ अ

आ

आड़ि

मेड़

आ ते आड़ि
आड़ि–आड़ि सिमेः सेनोः तना,
हड़म तुयु सिमेएः लोड़ो तना।

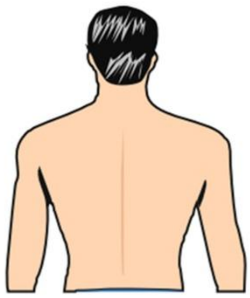

आड़ांदि	विवाह	बुआङ	बुआङ बाजा	देआ	पीठ

आ आ आ

इ

इपिल

तारा

इ ते इपिल
जका–मका, जका–मका,
निदा नुबा, सिरमारे,
इपिलेको झका–मका।

इडि	एड़ी	टुइला	टोहिला	हइ	मछली

इ इ इ

ई

ईल

पंख

ई ते ईल
ईल ईल चिकन ईल
ईल ईल चेंड़ें ईल।

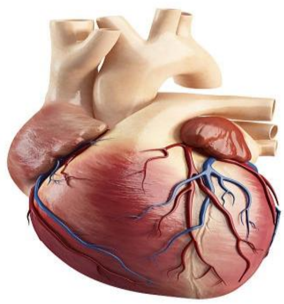

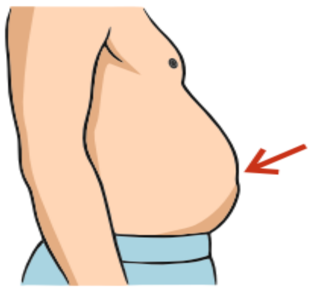

ईम	दिल	लाई	पेट	मोराई	मूली

ई ई ई

उ

उलि

आम

उ ते उलि
बेरेल उलि, जरोम उलि,
होनको सुकुआ, सोबेन उलि।

उरिः	मवेशी	उपुनिआ	चार	तोअउ	कोयल

उ	उ	उ	

ऊ

ऊब

बाल

ऊ ते ऊब
हेंदे ऊब, पुंडि ऊब,
होन रे हेंदे ऊब,
हड़म रे पुंडि ऊब।

ऊद	मशरूम	ऊका	कोहनी	ऊतु	सब्जी

ऊ ऊ ऊ

ए

एदेल

सेमल

ए ते एदेल
एदेल बा, मुरुद बा,
जेंगेद–जेंगेदा एदेल बा।

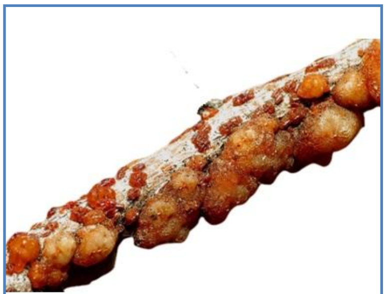

ए	लाह	पएला	आंचल	एसंडि	हरीस

ए ए ए

ओ

ओड़ाः

घर

ओ ते ओड़ाः

अमाः ओड़ाः, अञाः ओड़ाः,

अञाः ओड़ाः, चतोम ओड़ाः,

अमाः ओड़ाः, डंडा ओड़ाः।

ओते	जमीन	कोओः	बगुला	जोनोओः	झाड़ू

ओ ओ ओ

अं

अंका

दरवाजा

अं ते अंका
अंका दुअर, पंका दुअर,
होनको इनुङआ, दुअर दुअर।

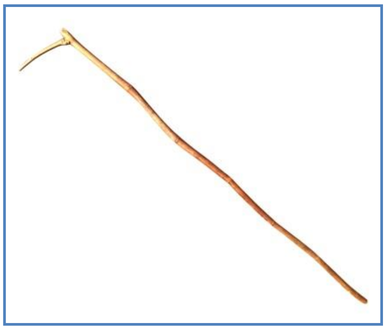

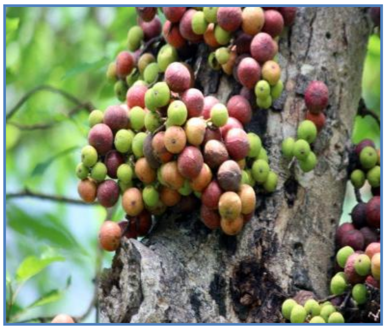

अंकड़ि	अंकुश	अंकोअर	ढेला	अंड़ि	गूलर

अं अं अं

अः

अअः

धनुष

अः ते अअः

अअः सार अबुअः उरुम तना,

बिरसअः उनुरुम उलगुलान तना।

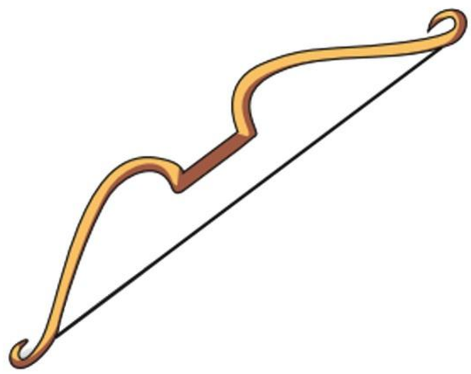

दअः	पानी	सेतअः	सुबह	मरअः	मोर

अः अः अः

क

कदल

केला

क ते कदल

कदल, कुदाको जोमो का,

सेंड़ा पेड़ेःको नमोः का।

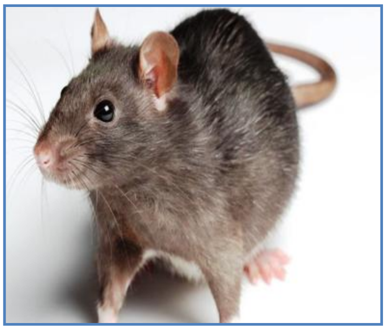

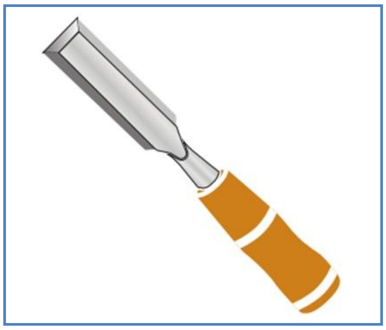

कटेआ	चूहा	ककरु	कोहड़ा	रुका	छेनी

क क क

ख

खरपा

चप्पल

ख ते खरपा

खरपा कारे सेन बलाए,

पढ़व कारे जिदन बलाए।

खरा	पटा	खोंगसो	जूड़ापिन

ख	ख	ख	

ग

गइ

गाय

ग ते गइ

अराः गइ, पुंडि गइ,

बर लुतुर, उपुन कटा गइ।

गड़ि	बंदर	गुगुरा	घुंघरु	डोंगा	नाव

ग ग ग

ङ

दुमङ

मांदर

बुलुङ कारे सिबिल बनो,
दुमङ कारे सुसुन बनो।

बुलुङ	नमक	सिङकुला	शेर	जङ	हड्डी

ङ ङ ङ

च

चतोम

छाता

च ते चतोम
मद चतोम, लिजा चतोम,
जरगि रे चेचअः चतोम,
लुमे तना, सुरुसुटु, सुरुसुटु,
कमिअबु कुरुमुटु, कुरुमुटु।

चटु	घड़ा	गचइ	छिपकली	मोचा	मुँह

च च च

ज

जलोम

जाल

ज ते जलोम

ओड़ाः रेदो सिकिंड़ि जलोम,

बंदा रेदो हइ जलोम।

जटा	सूखी टहनी	लिजअः	कपड़ा	माजि	खटमल

ज ज ज

झ

झइल

मोर पंख

झ ते झइल

मरअः झइल बियन–बोयोन,

बिर कुला लियन–लोयोन।

झगड़	अंकुश गुच्छा	झिमरि	मछली पकड़ने का उपकरण	झुंपा	गुच्छा

झ झ झ

ञ

अञ

मैं

अञ दो लिटा होन,
बउञ दोए: दुलड़ाञ,
अम दो मरङ होन,
बउञ दोए: दलमा।

बाउञ	मेरे बड़े भाई	अपुञ	मेरे पिताजी	मिसिञ	मेरी बहन

ञ ञ ञ

ट

टपा

टोकरी

ट ते टपा
टपा टिपा चिरे टुपा,
बा टुंपाते पेरेः टुपा।

टटि	दीप	हटअः	सूप	बुटि	नाभी

ट ट ट

ड

डउ

बड़हल

ड ते डउ

दारु दारु रे हउ हउ,

डउ दारु रे डउ डउ।

डाटा	दाँत	चउडल	पालकी	मिंडि	भेड़

ड ड ड

ढ

ढिबरि

ढिबरी

ढबरा ढिबरि चि टिने ढिबरि,
सेंड़ा मरसल दो टिने ढिबरि।

ढाकि	बड़ी टोकरी	ढेलुआ	झूला	ढांका	ढांक

ढ ढ ढ

त	तसद
	घास

त ते तसद

बेड़ा रे बेड़ा रे तसद दो,

इरे लेगे मोनेअः तसद दो।

तइ	तवा	पुतम	पँड़की	हेलता	बाँस का करील

त त त

थ

थड़ि

थाली

थ ते थड़ि

थड़ि थड़ि पितल थड़ि,

पितल थड़ि रे तोआ मंडि।

थेर	फेंकना	थेगा	पैर रखना	पुथि	पुस्तक

थ थ थ

द

दतरोम

दराँती

द ते दतरोम
लाई रे ओकोए डाटा कना,
लाई रे दतरोम डाटा कना।

दारु	पेड़	कोदोम	कदंब	सुपिद	जूड़ा

द द द

न

नयल

हल

न ते नयल

जरगि दाः रे हो नयल सिउ,

बाबा रोआ रे हो चिकन गिउ।

नचा	चोटी	कोनडेः	कुल्हाड़ी	तबेन	चूड़ा

न न न

प

परकोम

चारपाई

प ते परकोम
मिअद काटा दो चतोम,
बरिआ काटा दो मनोआ होन,
अपिआ काटा दो हड़ामे होड़ो,
उपुनिआ काटा दो हो परकोम।

पाटि	चटाई	इपिड़िपियु	जुगनू	सुपु	बांह

प	प	प	

फ

फुदि

बांस की गेंद

पुस चंडुः दो रबङ–रबङ,

फुदि इनुङेको कबङ–कबङ।

फदा	लात मारना	फुर	फूकारा	फेचका	पिचकारी

फ फ फ

ब	बनम
	बनाम

ब ते बनम

राइ रति बनम दो,

रजा रति बनम दो,

चिका लेका हो रजाम,

बनमेया किङ–कोंग।

बा	फूल	डुबुरी	कटोरा	लटब	कैंची

ब ब ब

भ

भेंर

तुरही

अड़ांदि रे भेंर साड़ितना,

चि

अकड़ा रे दुमङ साड़ितना।

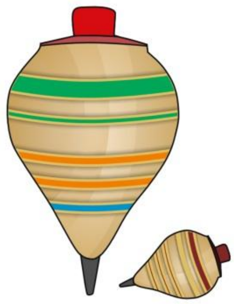

भअउरा	लट्टू	भटा	भट्ठी	भरकओ	उबलना

भ भ भ

म	मनचि
	मचिया

म ते मनचि
मनचि–मनचि होनको दुबाकना,
काको दुबाकनको तिंगुआकना।

मेद	आँख	कमड़ा	कंबल	मुंदम	अंगूठी

म म म

य

तयन

मगरमच्छ

गंगा गड़ा, तजना गड़ा,
गड़ा–गड़ा, रे तयन।
बुरु बेड़ा, बारु बेड़ा,
बेड़ा–बेड़ा रे तयर।

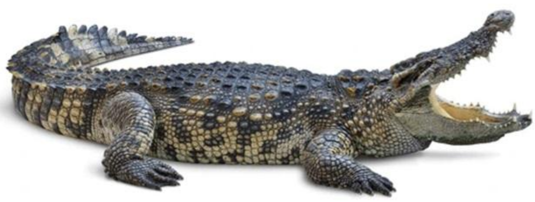

तयर	खीरा	बयर	रस्सी	ओयर	तैरना

य य य

र

रमझिंगा

भिंडी

र ते रमझिंगा
बकिड़ि–बकिड़ि रे रमझिंगा,
कमि उदम रे का रिंगा।

रनदा	रंदा	मरमर	कनखजूरा	बिर	जंगल

र	र	र	

ल

लद

रोटी

ल ते लद
कोदे लद, सकम लद,
लाई पेरे, जोम तारे, रसिका,
मयङ पेरेः, पटे तारे, चयला।

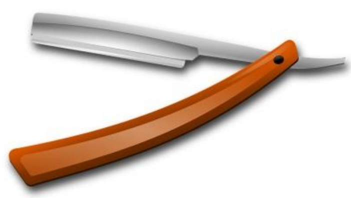

लचो	होंठ	होलद	उस्तरा	मेरेल	आंवला

ल ल ल

स

सकम

पत्ता

स ते सकम

जोजो सकम, पिर–पिर,

मद सकम, सिर–सिर,

ओको सकम, रे बोंगा बुरु,

सरजोम सकम, रे बोंगा बुरु।

सदोम	घोड़ा	ससङ	हल्दी	कोटासि	हथौड़ा

स स स

ह

हसा

मिट्टी

ह ते हसा

एला दुड़ा रेबु इनुङअः,

हसा दुड़ा रेबु इनुङअः।

एला–दोलाबु सुसुना,

हातु अकड़ा रेबु सुसुना।

हतर	बेतरा	हेसअः	पीपल	होरो	कछुआ

ह ह ह

ड़

सड़गि

झरना

बुरु सोंगा, होयो सांय–सांय,
गड़ा सड़गि, दअः सांओ–सांओ।

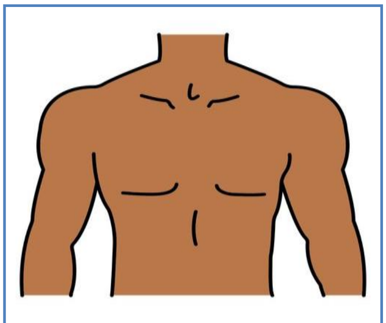

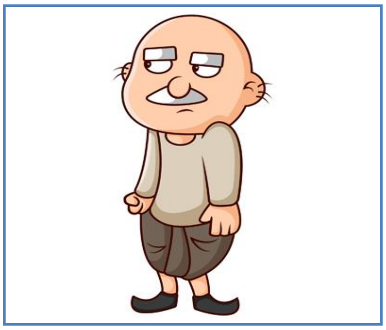

कुड़म	छाती	हड़म	बूढ़ा	सिकिंड़ि	मच्छर

ड़ ड़ ड़

मुनु बनि	मात्रा चिन्ह	उदाहरण	उदाहरण
अ	◌	ससन 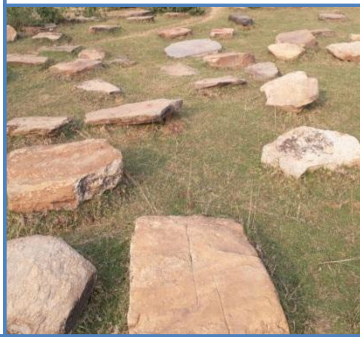	सरम
आ	◌ा	गाड़ा 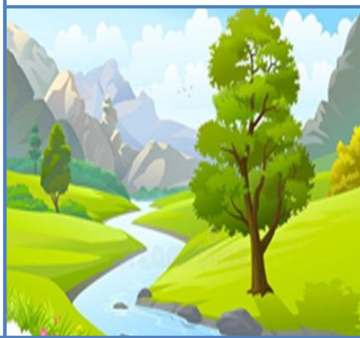	सांगा 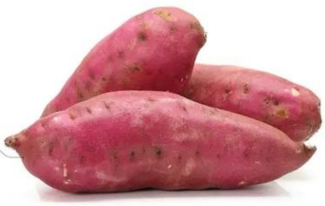
इ	◌ि	रिचि	अरिल
ई	◌ी	गीरा	ती

मुनु बनि	मात्रा चिन्ह	उदाहरण	उदाहरण
उ	◌ु	डुलुः	चुंदि
ऊ	◌ू	गूंगू	जूला
ए	◌े	चेंड़ें	चोके
ओ	◌ो	लोसोद	जोजो

मुनु बनि	मात्रा चिन्ह	उदाहरण	उदाहरण
अं	◌ं	चंडुः	गंगइ
अः	◌ः	सरअः	टुपअः
	्	मद्	तरोब्

लेका

1	मिअद	एक	
2	बरिआ	दो	
3	अपिआ	तीन	
4	उपुनिआ	चार	
5	मोड़ेआ	पाँच	
6	तुरिआ	छह	
7	ए’आ	सात	
8	इरिलिआ	आठ	
9	अरेआ	नौ	
10	गेलेआ	दस	
11	गेल मिअद	ग्यारह	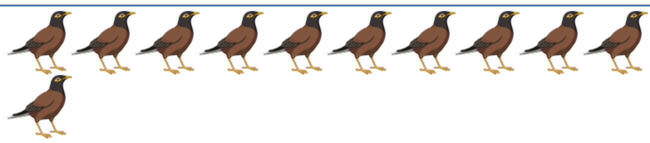
12	गेल बरिआ	बारह	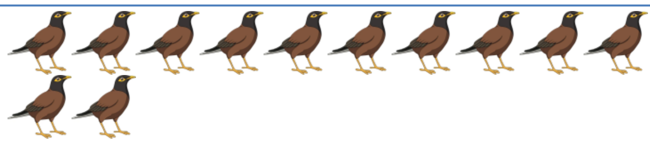
13	गेल अपिआ	तेरह	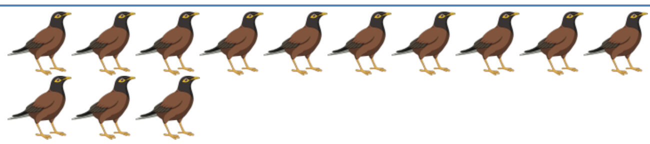
14	गेल उपुनिआ	चौदह	

15	गेल मोड़ेआ	पंद्रह	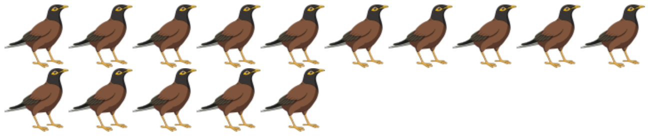
16	गेल तुरिआ	सोलह	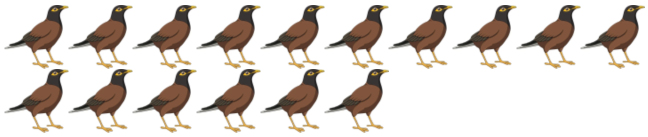
17	गेल ए'आ	सत्रह	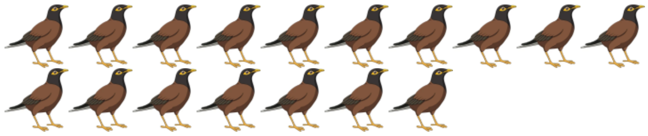
18	गेल इरिलिआ	अठारह	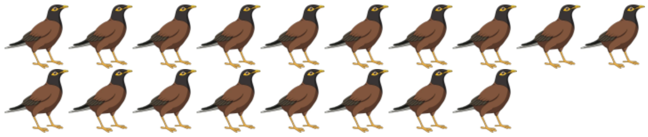
19	गेल अरेआ	उन्नीस	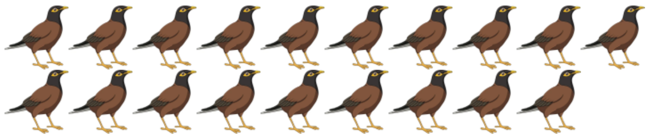
20	मिदहिसि	बीस	

1	1	1	1	
2	2	2	2	
3	3	3	3	
4	4	4	4	
5	5	5	5	
6	6	6	6	
7	7	7	7	
8	8	8	8	
9	9	9	9	
10	10	10	10	

11	11	11	11	
12	12	12	12	
13	13	13	13	
14	14	14	14	
15	15	15	15	
16	16	16	16	
17	17	17	17	
18	18	18	18	
19	19	19	19	
20	20	20	20	

हिंदी वर्णमाला

स्वर						
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	

व्यंजन				
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	
क्ष	त्र	ज्ञ	श्र	
ड़	ढ़			

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala

Install ePathshala Scanner app from Play Store and open	Get ready with QR code scanning window	Place scanner above the QR code	Select and click on the link	Use available e-Resource

For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://epathshala.nic.in/topics.php and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download **DIKSHA** app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using **DIKSHA**

Select preferred language	Choose your role: Student or Teacher	Grant access and allow app permissions	Tap to scan the QR code	Focus camera on the QR code in textbook	Click to Play QR code specific e-resource(s)

For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://diksha.gov.in/resources and enter the alphanumeric code given under the QR code

PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT (Phase-1)

SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages
1	ASSAMESE	9	KONKANI	17	SANSKRIT
2	BENGALI	10	MAITHILI	18	SANTALI
3	BODO	11	MALAYALAM	19	SINDHI
4	DOGRI	12	MANIPURI	20	TAMIL
5	GUJARATI	13	MARATHI	21	TELUGU
6	HINDI	14	NEPALI	22	URDU
7	KANNADA	15	ODIA		
8	KASHMIRI	16	PUNJABI		

NON - SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages
1	ADI	20	KINNAURI	39	MISING
2	ANAL	21	KISAN (KUNHU)	40	MIZO
3	ANGAMI	22	KODAVA	41	MOGH
4	AO	23	KOKBOROK	42	MUNDARI
5	BHILI (VASAVA)	24	KOLAMI	43	NYISHI (NISSI)
6	BHUTIA	25	KONDA	44	RABHA
7	BISHNUPRIYA MANIPURI	26	KORKU	45	RAI
8	DEORI	27	KORWA	46	SHERPA
9	DIMASA	28	KOYA	47	SAVARA (SORA)
10	GADABA (GUTOB)	29	KUI	48	SÜMI (SEMA)
11	GARO	30	KUKI	49	TAMANG
12	HALBI	31	KURUKH	50	TANGKHUL
13	HMAR	32	KUZHALE (KHEZHA)	51	TANGSA
14	JATAPU (KUVI)	33	LEPCHA	52	TIWA (LALUNG)
15	JUANG	34	LIANGMAI	53	TULU
16	KABUI	35	LIMBU	54	WANCHO
17	KARBI	36	LOTHA		
18	KHANDESHI	37	MAO		
19	KHARIA	38	MISHMI (IDU)		

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
0821 2515820 (Director) / ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
011 2696 2580 / dceta.ncert@nic.in